



गैर-नष्पिपादनकारी परसिंपत्तियाँ और बैड बैंक की अवधारणा का औचित्य

भूमिका

गैर-नष्पिपादनकारी परसिंपत्तियाँ (non-performing assets-NPA) कसिी भी अरथव्यवस्था के लयि बोझ हैं। ये देश की बैंकगि व्यवस्था को सुगुण बनाते हैं। गौरतलब है कपिछिले कुछ वर्षों से 'बैड लोन' (खराब ऋण) और 'बैड एसेट' (खराब परसिंपत्तियाँ) में बेतहाशा वृद्धि हुई है, वदिति हो कबैड लोन और बैड एसेट से ही मलिकर बनती हैं 'गैर-नष्पिपादनकारी परसिंपत्तियाँ'। बैड लोन से बैंको के लाभांश में कमी आती है, फलस्वरूप बैंक के लयि ऋण देना मुश्कलि हो जाता है। बैंको की साख दर में लगातार गरिवट, वर्तमान में एक महत्त्वपूर्ण चतिा बनी हुई है। गैर-नष्पिपादनकारी परसिंपत्तियों की समस्यल से नपिटने के लयि हाल के वर्षों में एक नई अवधारणा नकिलकर सामने आ रही जसिका नाम है 'बैड बैंक'। कहते हैं 'भूत से सबक लेकर व्यक्तिको वर्तमान में भवषिय का चतिन करना चाहयि' अरथव्यवस्था की तमाम बातों पर यह उक्तिलागू होती है और बैड बैंक की अवधारणा भी इससे अछूती नहीं है। अतः पहले यह समझते हैं कबि अब तक गैर-नष्पिपादनकारी परसिंपत्तियों की समस्यल का समाधान हमने कैसे कयिा है? तत्पश्चात हम यह देखेंगे कबि भारत को गैर-नष्पिपादनकारी परसिंपत्तियों के दलदल से नकिलकर वकिस-पथ पर ले जाने में बैड बैंक कहाँ तक सार्थक है?

बैंक कैसे करते हैं गैर-नष्पिपादनकारी परसिंपत्तियों का प्रबंधन?

- यदलिनदारों दवारा तय समय पर ऋण नहीं चुकाया जाता है तो बैंक ऋण के बदले गरिवी रखी गई समपत्तिको ज़ब्त कर सकता है और फरि उस समपत्तिको बेच सकता है। गैर-नष्पिपादनकारी परसिंपत्तियों की गंभीर होती समस्यल के समाधान के लयि भारतीय रज़िर्व बैंक ने सामरकि ऋणपुनरगठन (Strategic Debt Restructuring-SDR) योजना शुुरु की थी। एसडीआर के तहत यदकौई कंपनी या संस्था ऋण नहीं चुका पा रही है तो उन डफिल्टर कंपनियों के प्रबंधन में बैंक बड़ी भूमिका नभिा सकते हैं। यहाँ तक किएसडीआर योजना के तहत बैंक, कंपनी के प्रमोटर्स को भी बदल सकते हैं।
- बैंक, बैड लोन का पुनरगठन भी कर सकते हैं जसिसे कलिनदारों को उधार चुकाना थोड़ा आसान हो जाए। बैंक, गैर-नष्पिपादनकारी परसिंपत्तियों को डसिकाउंट पर परसिंपत्तिपुनरगठन कंपनियों को भी बेचकर स्वयं का ऋण चुकता कर सकते हैं।

गैर-नष्पिपादनकारी परसिंपत्तियों के प्रबंधन में आने वाली दकिकतें

- परसिंपत्तियों के ज़बती के माध्यम से स्वयं का ऋण चुकता करना बैंको के लयि प्रायः फायदेमंद नहीं होता क्योकजि़ब्त की गई परसिंपत्तियों को प्रायः कम दाम पर बेचना पड़ता है जो कदिये गए ऋण की तुलना में बहुत ही कम होती है। भारत में एसडीआर योजना अभी तक सुचारू ढंग से आरम्भ नहीं हो पाई है, इसका कारण यह है कबि भारत के सार्वजनकि क्षेत्र के बैंको का कंपनियों के प्रबंधन का कौई अनुभव नहीं है और यह उनके लयि एक दुषकर कार्य है ककमपनियों का बेहतर प्रबंधन कर वे अपने ऋण की लागत वसूल कर सकें।
- गैर-नष्पिपादनकारी परसिंपत्तियों के पुनरगठन में दो समस्यलएँ हैं। पहली यह कबि हो सकता है बैंक के प्रबंधक अवैध तरीके से कुछ कम्पनियों के गैर-नष्पिपादनकारी परसिंपत्तियों का मूल्य बहुत ही कम कर दें ताकबि अवैध लाभ कमा सकें। दूसरी समस्यल यह है कबि यदगैर-नष्पिपादनकारी परसिंपत्तियों को डसिकाउंट दर पर बेचा जाता है तो सीधे इसका असर बैंकों के लाभांश पर देखने को मल्लिगा।

क्या है बैड बैंक?

- बैड बैंक' एक आरथकि अवधारणा है जसिके अंतरगत आरथकि संकट के समय घाटे में चल रहे बैंकों दवारा अपनी देयताओं को एक नए बैंक को स्थानांतरति कर दयिा जाता है। ये बैड बैंक करज़ में फँसी बैंकों की राशिको खरीद लेगा और उससे नपिटने का काम भी इसी बैंक का होगा।
- जब कसिी बैंक की गैर-नष्पिपादनकारी परसिंपत्तियाँ सीमा से अधकि हो जाती हैं, तब राज्य के आश्वासन पर एक ऐसे बैंक का नरिमाण कयिा जाता है जो मुख्य बैंक की देयताओं को एक नश्चिति समय के लयि धारण कर लेता है।

बैड बैंक का सदिधांत स्वागत योग्य क्यो?

- बैड बैंक की चर्चा केंद्र में इसलयि है क्योकजिस बार के आरथकि सरवेक्षण में बैड बैंक का जकिर कयिा गया है। हाल ही में नीतिआयोग के उपाध्यकष अरवदि पानगढ़यिा ने भी डुबते करज़ से नपिटने के लयि बैड बैंक को बेहद जरूरी बताया है।
- वदिति हो कबैड बैंक एआरसी यानी परसिंपत्तिपुनरगठन कंपनियों की तरह काम करेगा। बैड बैंक, एक ऐसा बैंक होगा जो दूसरे बैंकों के डुबते करज़ को खरीदेगा। धय्यातव्य है कबैड बैंक का नाम 'पब्लकि सेक्टर एसेट रहिबलिटिशन एजेंसी' यानी पीएआरए होगा और यह प्रयोग जर्मनी, स्वीडन, फ्रांस जैसे देशों में सफल रहा है।
- दरअसल बैंकों (खासकर सार्वजनकि क्षेत्र के बैंकों की) की गैर-नष्पिपादनकारी परसिंपत्तियाँ तेजी से बढ़ी हैं। वतित वर्ष 2017 की पहली छमाही में

कुल गैर-नष्पादनकारी परसिंपत्तियों बढकर 6.7 लाख करोड रुपये पर पहुँच गई हैं। बैंकों के कुल ऋण का करीब 9.7 फीसदी गैर-नष्पादनकारी परसिंपत्तियों में तबदील हो चुका है और करीब 80 फीसदी गैर-नष्पादनकारी परसिंपत्तियों सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में हैं।

- बैड बैंक के आने से दूसरे बैंकों से डूबते करज़ को वसूलने का दबाव हट जाएगा। दूसरे बैंक नए ऋण देने पर ध्यान केन्द्रति कर पाएंगे। बैंकों को अपने डूबते करज़ बैड बैंक को बेचने की सुवधि मल्लिगी। डफाल्टर कंपनियों की संपत्ति बेचने के काम में तेजी आएगी। बैंक अधिकारी परसिंपत्तियों की ज़बती की जगह बैंकगि गतविधियों को सुचारू ढंग से चला पाएंगे।

बैड बैंक से संबंधति समस्यारूँ ?

- बैड बैंक की स्थापना में सबसे बड़ी समस्यारूँ बैंक में हसिसेदारी को लेकर है। यह जानना दलिचस्प है कसिमस्यारूँ नजिी और सार्वजनिक दोनों ही क्षेत्रों के अधिकितम भागीदारी से है। यद बैड बैंक में सरकार की हसिसेदारी अधिक हो तो बैंकों की गैर-नष्पादनकारी परसिंपत्तियूँ इतनी अधिक हो गई है कसि बैड बैंक के माध्यम से इनकी खरीद पर सरकार को उललेखनीय व्यय करना पड सकता है। साथ ही एक सरकारी बैड बैंक को उन्हीं समस्यारूँ का सामना करना पडेगा जनिका सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक गैर-नष्पादनकारी परसिंपत्तियों के सन्दर्भ में कर रहे हैं।
- यद बैड बैंक को नजिी क्षेत्र के हवाले कर दया गया तो सबसे बड़ी समस्यारूँ गैर-नष्पादनकारी परसिंपत्तियों के मूल्य को लेकर हो सकती है। नजिी क्षेत्र का बैड बैंक अपने लाभ को ध्यान में रखते हुए गैर-नष्पादनकारी परसिंपत्तियों का मूल्य तय करेगा। यद यह मूल्य बहुत अधिक हुआ तो बैड बैंक का कोई अर्थ नहीं रह जाएगा और यद यह मूल्य बहुत ही कम हो गया तो बैंकों को उनकी ऋण देयता के अनुपात में राशानिही मलि पाएगी।

नष्कर्ष

- बैड बैंक नष्चिति ही अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने वाला कदम प्रमाणति हो सकता लेकिन सर्वप्रथम बैड बैंक की स्थापना नजिी इक्वटी फंड की तरह करनी होगी जसिमें सरकार की हसिसेदारी 50% अधिक नहीं हो। इन बैंकों में अलग-अलग बैंकों के ऐसे वशिषज्जों को रखा जाए जो अलग-अलग बैंकों की बैड एसेट का प्रबंधन और पुनर्गठन कर सकें। बैड बैंक को केन्द्रीय सत्कर्ता आयोग या सीबीआई जैसी कसिी बाह्य नगिरानी व्यवस्था के अंतर्गत लाने के बजाय कसिी आंतरिक सत्कर्ता टीम के तहत रखा जाए जो कसिी बैकगि से संबंधति हो।
- गौरतलब है कसिी तरह से डूबी संपत्ति को पुनर्जीवति करना या प्राप्त करना कोई आसान काम नहीं है। बैड बैंक के प्रस्तावति ढाँचे के अनुरूप अगर सब कुछ सही चलता रहा, तो नजिी नविशक को बैंकों की इक्वटी में नविश करने के लयि प्रोत्साहन मल्लिगी। ये नजिी नविशक इन बैंकों की गैर-नष्पादनकारी परसिंपत्तियों के लयि स्वतंत्र बोली लगा सकेंगे।
- बैड बैंक एक उद्देश्यपूर्ण संकल्पना है लेकिन इन सभी उपायों से ही बैड बैंक अपने उद्देश्य की प्राप्त में सफल हो पाएगा।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/non-performing-assets-and-concept-of-bad-bank>

